DV6C7U

पाठ – 1.1

चन्द्रगहना से लौटती बेर

केदारनाथ अग्रवाल

जीवन परिचय

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के कमासिन गाँव में सन् 1911 में हुआ। पेशे से वकील रहे केदारनाथ का तत्कालीन साहित्यिक आंदोलनों से गहरा जुड़ाव रहा। ये प्रगतिवादी धारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं। जनसामान्य का संघर्ष और प्रकृति सौंदर्य उनकी कविताओं का मुख्य विषय रहा है। ***नींद के बादल, युग की गंगा, फूल नहीं रंग बोलते हैं, पंख और पतवार*** *तथा* ***कहे केदार खरी–खरी*** *आदि उनकी प्रमुख काव्य–कृतियाँ है। उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।*

देख आया चंद्रगहना!
देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।
एक बीते के बराबर
यह हरा ठिंगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।
पास ही मिल कर उगी है
बीच में अलसी हठीली,
देह की पतली, कमर की है लचीली,
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर
कह रही हैं, जो छुए यह,
दूँ हृदय का दान उसको।
और सरसों की न पूछो –
हो गयी सब से सयानी,

हाथ पीले कर लिये हैं,
ब्याह–मंडप में पधारी
फाग गाता मास फागुन,
आ गया है आज जैसे।
देखता हूँ मैं: स्वयंवर हो रहा है,
प्रकृति का अनुराग – अंचल हिल रहा है
इस विजन में,
दूर व्यापारिक नगर से
प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।
और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में जो उगी है घास भूरी
ले रही वह भी लहरियाँ।
एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खम्भा
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी,
प्यास जाने कब बुझेगी!
चुप खड़ा बगुला डुबाए टांग जल में,
देखते ही मीन चंचल
ध्यान–निद्रा त्यागता है,
चट दबाकर चोंच में
नीचे गले के डालता है!
एक काले माथे वाली चतुर चिड़िया
श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन
टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर,
एक उजली चटुल मछली
चोंच पीली में दबा कर
दूर उड़ती है गगन में!
औ यहीं से –
भूमि ऊँची है जहाँ से –
रेल की पटरी गई है।
ट्रेन का टाइम नहीं है।

मैं यहाँ स्वच्छन्द हूँ,
जाना नहीं है।
चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी
कम ऊँची–ऊँची पहाड़ियाँ
दूर दिशाओं तक फैली हैं।
बाँझ भूमि पर
इधर–उधर रींवा के पेड़
काँटेदार कुरूप खड़े हैं।
सुन पड़ता है
मीठा–मीठा रस टपकाता
सुग्गे का स्वर
टें टें टें टें;
सुन पड़ता है
वनस्थली का हृदय चीरता,
उठता–गिरता,
सारस का स्वर
टिरटों–टिरटों;
मन होता है –
उड़ जाऊँ मैं
पर फैलाए सारस के संग
जहाँ जुगुल जोड़ी रहती है
हरे खेत में,
सच्ची प्रेम–कहानी सुन लूँ
चुप्पे–चुप्पे।

शब्दार्थ

बीते के बराबर – एक बलिश्त का नाप (लगभग 22.5 से.मी.); **मुरैठा** – पगडी; **अनुराग** – स्नेह, प्रेम; **विजन** – निर्जन; **अनगढ़** – प्राकृतिक; **चंद्रगहना** – एक गाँव का नाम; **अलसी** – एक तिलहन का पौधा; **फाग** – होली के मौसम में गाया जाने वाला लोकगीत; **चकमकाता** – चौंधियाता, चकाचौंध पैदा करता; **चटुल** – चतुर, चालाक; **जुगुल** – युगल, दो; **रींवा** – एक पेड़ जो बबूल के जैसा होता है; **हठीली** – जिद्दी।

अभ्यास

पाठ से

1. अलसी के मनोभावों का वर्णन कीजिए?
2. विजन किसी व्यापारिक नगर से क्यों श्रेष्ठ है?
3. काले माथेवाली चिड़िया किस तरह से मछली पकड़ती है?
4. ''बाँधे मुरैठा शीश पर'' इस पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
5. ''देखता हूँ मैं स्वयंवर हो रहा है, प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है।'' इन पंक्तियों में प्रकृति के किस दृश्य की ओर संकेत किया गया है।
6. प्रेम की प्रिय भूमि को अधिक उपजाऊ क्यों बताया गया है?
7. निम्नांकित पंक्तियों के भावार्थ लिखिए–

   (क) एक चाँदी का बड़ा–सा गोल खंभा
   आँख को है चकमकाता।

   (ख) सुन पड़ता है
   वनस्थली का हृदय चीरता
   उठता–गिरता
   सारस का स्वर।

पाठ से आगे

1. अपने आस–पास के किसी प्राकृतिक स्थल का वर्णन कीजिए, जिसके दृश्य आपको इस पाठ को पढ़ते समय याद आ जाते हैं।
2. एक कोलाहल भरे, घनी आबादी वाले नगर तथा शांत ग्रामीण अंचल की तुलना कीजिए और बताइए कि दोनों में कौन–कौन सी बातें आपको पसंद हैं और कौन–कौन सी नापसंद। अपनी पसंदगी और नापसंदगी का कारण भी लिखते हुए इसे एक तालिका के माध्यम से दर्शाइए।
3. 'बगुला' समाज के किस वर्ग का प्रतीक है और उनकी किन विशेषताओं को रेखांकित करता है? आज के समाज में यह उदाहरण कितना प्रासंगिक है?

DVF89H

भाषा के बारे में

DVP4B5

1. प्रकृति का अनुराग – अंचल हिल रहा है, जो मानवीकरण का उदाहरण है। **मानवीकरण अंलकार**– जहाँ जड़ वस्तुओं या प्रकृति पर माननीय चेष्टाओं का आरोप किया जाता हैं वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। पाठ से मानवीकरण अलंकार के ऐसे ही अन्य उदाहरण लिखिए।

2. पाठ में 'हरा ठिगना चना', 'हठीली अलसी', 'चतुर चिड़िया' आदि विशेषणयुक्त शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार आप अपने आस–पास के कुछ पौधों, पक्षियों, फलों या जीव–जन्तुओं को किस तरह के विशेषणों के साथ प्रस्तुत करना चाहेंगे। ऐसे दस उदाहरण दीजिए।

प्रायोजना कार्य

DVXZCS

1. प्रकृति के सुंदर चित्रण की अन्य कविताओं का संकलन कर पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

2. किसी प्राकृतिक स्थल के भ्रमण को याद करते हुए एक लेख तैयार कीजिए और उसे कक्षा में सुनाइए।

3. कवि शमशेर बहादुर सिंह द्वारा लिखित कविता को पढ़ें और सुबह के जो दृश्य आपके मन में आए, उनके चित्र बनाएँ।

उषा

प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा–से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और...
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।